e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

## IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 4, April 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

# ब्रजभूमि के अनुष्ठानों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

**डॉ राजेश कुमार शर्मा**

**सह - आचार्य (समाजशास्त्र) एवं प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, सैपऊ, धौलपुर, राजस्थान**

**सारांश**

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी पीले वस्त्र धारण करके आए ब्रज वासियों का मेला माता बज्रेश्वरी देवी के दरबार में सज चुका है। हाथ में लाल लाल रंग की ध्वज और साथ में पूजा-अर्चना की थाली लिए पीले वस्त्र धारण किए भक्तों की टोलियां माता बज्रेश्वरी देवी के मंदिर की ओर बढ़ रही हैं। मकसद यही है कि माता की पावन पिंडी के दर्शन होंगे और पूजा-अर्चना के बाद अवश्य माता मन की मुराद पूरी करेगी। ऐतिहासिक नगरी की सड़कों पर ऐसा दृश्य कोई पहली मर्तबा देखने को नहीं मिल रहा बल्कि हर साल उत्तर प्रदेश से पीले वस्त्र धारण करके आए भक्त चैत्र माह के नवरात्र में जहां मां के दर्शनों के लिए आते हैं और इस उम्मीद के साथ वापस लौट जाते हैं कि मां झोलियां भरेगी और अगले वर्ष फिर बुलाएगी । वैसे तो इन श्रद्धालुओं का आना-जाना रंगों के त्योहार होली के दिन से शुरू हो जाता है, परंतु नवरात्र के रोज तो ब्रजवासियों की भारी भीड़ उमड़ पड़ती है। भक्तों की टोलियां लांगुरिया गीत गाते हुए तथा नृत्य करते हुए देवी मैया के दर्शनों के लिए जाते हैं । यूं तो भगवती माता के मंदिर के प्रति अटूट श्रद्धा के कारण वर्षभर यात्रियों का तांता मंदिर में लगा रहता है, परंतु चैत्र मास में देवी पूजन का विशेष महत्त्व माना जाता है । यही कारण है कि चैत्र नवरात्र में ब्रज भूमि उत्तर प्रदेश के लोग पीले वस्त्र धारण करके नंगे पांव परिवार सहित माता के दर्शनों के लिए यहां आते हैं । देवी माता के दर्शनों के लिए जो यात्रा की जाती है उसे जात यात्रा कहा जाता है। पंडितों के पोथी पत्र के स्थान पर लोक रीतियों के अंतर्गत जात का अनुष्ठान पूर्ण होता है। संतान प्राप्ति, स्वास्थ्य व समृद्धि आदि मनौतियां मन में लिए देवी की जात की जाती है । भक्तों का यह विश्वास रहता है कि देवी की कृपा से मनौतियां पूर्ण होगी । ब्रज भूमि से आए माता के श्रद्धालु बताते हैं कि देवी की जातर पर जाने के लिए शुभ मुहूर्त निकलवाया जाता है। जाट पर जाने वाले नर -नारी हाथ में गोटा लगी लाल कपड़े की ध्वज लेकर सर्वप्रथम गांव की लोकदेवी की पूजा करके बज्रेश्वरी देवी मंदिर की यात्रा पर निकलते हैं । यह स्वयं को ध्यानु भक्त के वंशज कहते हैं तथा बज्रेश्वरी देवी को अपनी कुलजा देवी मानते हैं। कहते हैं कि ब्रजभूमि से पीले कपड़े धारण कर अनन्य श्रद्धा से जब श्रद्धालु आने लगे तो इसका नाम बज्रेश्वरी हुआ। उत्तर प्रदेश से आए एक भक्त के अनुसार वहां का स्थानीय पुजारी श्रद्धालुओं की टोली के मुखिया को हाथ का पंजा लगा देता है, जो यात्रा के सफल होने का संकेत होता है। जब यात्री दल यात्रा सफल कर लौटता है, तो यहां का पुरोहित सब की पीठ पर अपने दाहिने हाथ का पंजा लगाकर आशीर्वाद देता है कि आपकी यात्रा सफल हुई ।

## परिचय

अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) में ब्रज के मठ मंदिरों में यूं तो अनेक धार्मिक कार्यक्रम और अनुष्ठान होते हैं, लेकिन ब्रज के प्रमुख स्थलों मथुरा, वृंदावन और गोवर्धन की परिक्रमा का विशेष महत्व है। धार्मिक मान्यता है कि इस समय में जो भी पूजा या धार्मिक कार्य किए जाते हैं उसका कई गुना पुण्य मिलता है। इस माह में ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा का अलग महत्व है। कृष्ण काल के तमाम लीला स्थल और देवालय जो पूरे ब्रज में चौरासी कोस में फैले हुए हैं। मान्यता है कि इनकी परिक्रमा अधिक मास में करके श्रद्धालु पुण्य कमाते हैं। ब्रज चौरासी कोस की यह परिक्रमा मथुरा के पड़ोसी राज्य हरियाणा और राजस्थान के गांवों से होकर गुजरती है।[1]

1300 गावों से गुजरती हैं परिक्रमा

ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा मथुरा के अलावा राजस्थान और हरियाणा के होडल जिले के गांवों से होकर गुजरती है। करीब 268 किलोमीटर परिक्रमा मार्ग में परिक्रमार्थियों के विश्राम के लिए 25 पड़ावस्थल हैं। इस पूरी परिक्रमा में करीब 1300 के आसपास गांव पड़ते हैं। कृष्ण की लीलाओं से जुड़ी 1100 सरोवरें, 36 वन-उपवन, पहाड़-पर्वत पड़ते हैं। बालकृष्ण की लीलाओं के साक्षी उन स्थल और देवालयों के दर्शन भी परिक्रमार्थी करते हैं जिनके दर्शन शायद पहले ही कभी किए हों। परिक्रमा के दौरान श्रद्धालुओं को यमुना नदी को भी पार करना होता है।

सभी तीर्थों को ब्रज में बुलाया

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 4, April 2022||
|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने मैया यशोदा और नंदबाबा के दर्शनों के लिए सभी तीर्थों को ब्रज में ही बुला लिया था। पंडित राधाशरण जी महाराज के अनुसार जब यशोदा मैया और नंद बाबा ने भगवान श्री कृष्ण से 4 धाम की यात्रा की इच्छा जाहिर की तो भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि आप बुजुर्ग हो गए हैं, इसलिए मैं आप के लिए यहीं सभी तीर्थों और चारों धामों को आह्वान कर बुला देता हूं। उसी समय से केदरनाथ और बद्रीनाथ भी यहां मौजूद हो गए। 84 कोस के अंदर राजस्थान की सीमा पर मौजूद पहाड़ पर केदारनाथ का मंदिर है। पर्वत पर नंदी स्वरूप में दिखने वाली विशालकाय शिला के नीचे शिव जी का छोटा सा मंदिर है। इसके अलावा बद्रीनाथ भी 84 कोस में ही विराजमान हैं। जिन्हें बूढ़े बद्री के नाम से जाना जाता है। मंदिर के पास ही अलकनंदा कुंड भी है। इसके अलावा गुप्त काशी और यमुनोत्री और गंगोत्री के भी दर्शन यहां श्रद्धालुओं को होते हैं।[2]

शॉर्टकट पर अधूरी मानी जाती है परिक्रमा

84 कोस परिक्रमा के लिए स्थान, गांव और इसकी जद में आने वाले मंदिर और परिक्रमा मार्ग पहले से ही तय हैं और उसी रास्ते से होकर श्रद्धालु परिक्रमा करते हैं। कीचड़, कंकड़-पत्थर के रास्तों पर ही चलकर श्रद्धालु परिक्रमा पूरी करते हैं। कोई भी श्रद्धालु दूरी कम करने के लिए शॉर्टकट या दूसरे रास्तों से होकर नहीं गुजरता और ऐसा करने पर उसकी परिक्रमा अधूरी मानी जाती है।

ब्रज चौरासी कोस में पड़ने वाली प्रमुख सरोवर

कृष्ण की लीलाओं की साक्षी और उनसे जुड़ी प्रमुख सरोवरों में जो प्रमुख सरोवरें है, उनमें सूरज सरोवर, कुसुम सरोवर, विमल सरोवर, चंद्र सरोवर, रूप सरोवर, पान सरोवर, मान सरोवर, प्रेम सरोवर, नारायण सरोवर, नयन सरोवर आदि हैं। परिक्रमाथी इन सरोवरों के दर्शन करने के साथ ही आचमन लेकर और इनमें स्नान कर स्वयं को धन्य मानते हैं।

ब्रज में विद्यमान 16 देवियां

कात्यायनी देवी, शीतला देवी, संकेत देवी, ददिहारी, सरस्वती देवी, वृंदादेवी, वनदेवी, विमला देवी, पोतरा देवी, नरी सैमरी देवी, सांचैली देवी, नौवारी देवी, चौवारी देवी, योगमाया देवी, मनसा देवी, बंदी की आनंदी देवी।[3]

ब्रज क्षेत्र के प्रमुख महादेव मंदिर

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

भूतेश्वर महादेव, केदारनाथ, आशेश्वर महादेव, चकलेश्वर महादेव, रंगेश्वर महादेव, नंदीश्वर महादेव, पिपलेश्वर महादेव, रामेश्वर महादेव, गोकुलेश्वर महादेव, चिंतेश्वर महादेव, गोपेश्वर महादेव, चक्रेश्वर महादेव।

**केदारनाथ**

ऐसे होती है परिक्रमा

वाहनों से :

आजकल लोगों के पास समय का अभाव है। उनके लिए तमाम आश्रमों और संस्थाओं की ओर से ब्रज चौरासी कोस की यात्रा वाहनों के जरिए करवाई जाती है। इसके लिए परिक्रमा कराने वाले संचालकों की तरफ से सुविधानुसार एक तय शुल्क प्रति श्रद्धालु लिया जाता है। इसमें वाहन का किराया, खाना-पीना, ठहरना आदि शामिल होता है। वाहनों से कराई जाने वाली यह ब्रज चौरासी कोस यात्रा में 3 से 5 दिन का समय लगता है। इसमें श्रद्धालुओं को प्रमुखस्थलों, वनों, मंदिरों आदि के दर्शन कराए जाते हैं।

पैदल परिक्रमा

पैदल यात्रा का अपना अलग ही आनंद है। इसमें श्रद्धालु किसी मंदिर या आश्रम की ओर से कराई जाने वाली यात्रा में शामिल होकर अपने रुकने और ठहरने का शुल्क आश्रम या मंदिर संचालक को देता है, जो बहुत कम होता है। सारे इंतजाम आश्रम या मंदिर संचालक करते हैं। रुकने के लिए टैंट और खाने के लिए भोजन की व्यवस्था रहती है। इस परिक्रमा को पूरा करने में 30 दिन का समय लगता है। चलने वाले जत्थे के ऊपर तय होता है कि वह एक दिन में कितनी दूरी तय कर सकता है। देश के विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां इस परिक्रमा के लिए आते हैं।[4]

## विचार – विमर्श

बरसाना (मथुरा): गहवर वन में कराई जा रही खुदाई में अत्यंत प्राचीन चबूतरा जैसा स्थल निकला है। राधा-कृष्ण की रासलीला के पौराणिक महत्व से जुड़े गहवर वन में निकले इस स्थल को संत और विद्वतजन करीब साढ़े पांच सौ साल पुराना रासमंडल बता रहे हैं। इसे देखने के लिए ग्रामीणों का तांता लगा हुआ है। धार्मिक अनुष्ठान और आयोजन शुरू हो गए हैं।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

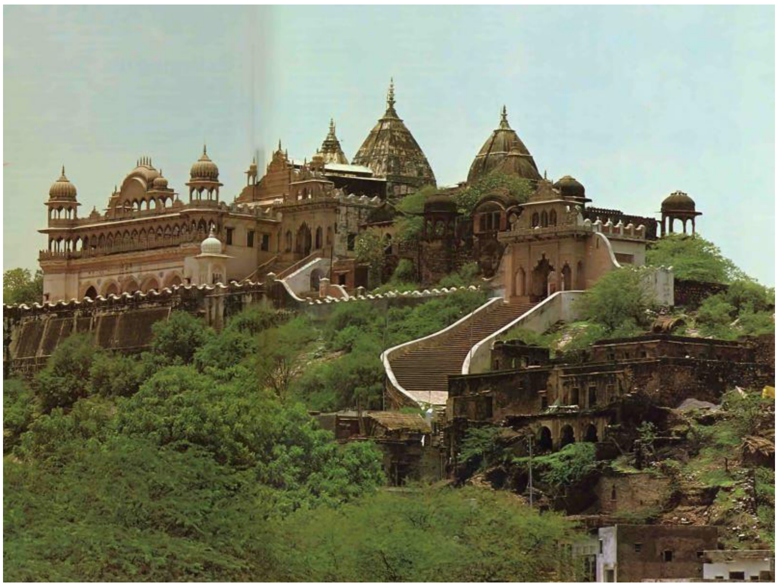

**बरसाना (मथुरा)**

समीपवर्ती गाव चिकसौली स्थित गहवरवन कुंड के पास ग्रामीणों को खुदाई में यह प्राचीन रासमंडल मिला है। बाबा अनंतदास ने बताया कि एक रात राधारानी की प्रेरणा हुई और उन्हें स्वप्न आया कि इस कुंड के पास जमीन के अंदर रासमंडल है। इस पर दो दिन पहले खुदाई शुरू कराई, जिसमें यह प्राचीन धरोहर निकल आई। चूने व पत्थर का बना यह रास मंडल साढ़े पांच सौ साल पुराना माना जा रहा है। संभावना जताई जा रही है कि ब्रज में रासलीलानुकरण व दिव्य संत घमंड देव आचार्य ने संभवत: इस रास मंडल का निर्माण कराया होगा। अब इस स्थल पर संतों ने श्रीमद्भागवत कथा, रासलीला और अखंड युगल नाम का संकीर्तन शुरू कराया है।

ब्रज के विरक्त संत रमेश बाबा का मानना है कि ब्रजवासियों व संतों के सहयोग से निकला रास मंडल प्रमाणित करता है कि आज भी राधाकृष्ण गहवरवन में रास रचाते हैं। ब्रजाचार्य पीठाधीश्वर गोस्वामी दीपक राज भट्ट ने का कहना है कि पुरातत्व विभाग को ऐसी प्राचीन धरोहरों को संरक्षित कराना चाहिए और गहवर वन पर शोध कराना चाहिए।[5]

आज भी गहवरवन में गुनगुनाते हैं घुंघरू

संत ही नहीं स्थानीय लोग भी कहते हैं कि गहवरवन की वाटिका में राधा के घुंघरुओं की आवाज सुनाई देती है। गहवरवन राधा का सबसे प्रिय वन था। मान्यता है कि इस वन को राधा ने अपने हाथों से रोपा था। रोज अपने प्रियतम के साथ वृषभानु नंदनी इस वन में रास रचाया करती थीं।

श्री कृष्ण के काल को बहुधा इन तीन धरोहरों से जोड़ा जाता है, गोवर्धन पर्वत, ब्रज भूमि तथा यमुना नदी। यमुना नदी का श्याम वर्ण जल कृष्ण के श्याम वर्ण के समान है। यमुना उनकी आठ पत्नियों में से एक है। यहाँ मथुरा में तो वह उनकी पटरानी है। ब्रज भूमि के दर्शन यमुना नदी के दर्शन के बिना अपूर्ण है।

मथुरा में यमुना नदी पर नौका विहार[6]

इस पवित्र नदी पर नौका विहार तीर्थ यात्रियों तथा पर्यटकों का लोकप्रिय क्रियाकलाप है।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

**विश्राम घाट**

ऐसा माना जाता है कि कंस का वध करने के पश्चात कृष्ण ने यहीं विश्राम किया था। इसीलिए इस घाट का नाम विश्राम घाट पड़ा। दोनों ओर १२-१२ घाटों के ठीक मध्य यह विश्राम घाट है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

**कंस किला अर्थात कंस का दुर्ग**

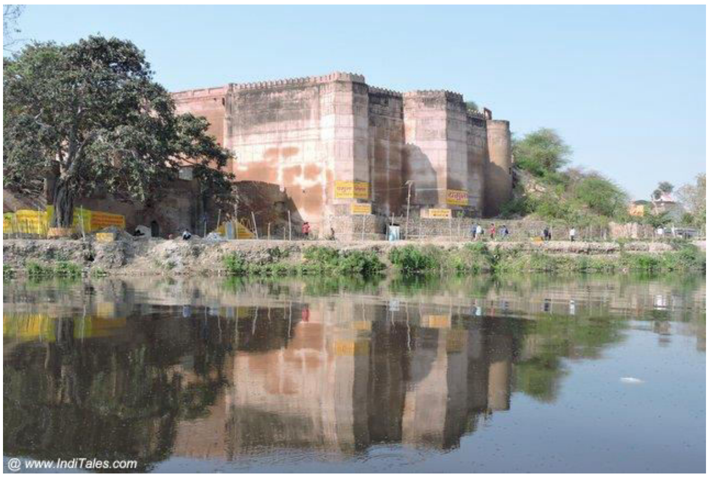


दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजा की जाती है। लोग इसे अन्नकूट के नाम से भी जानते हैं। इस त्यौहार का भारतीय लोकजीवन में काफी महत्व है। इस पर्व में प्रकृति के साथ मानव का सीधा सम्बन्ध दिखाई देता है। इस पर्व की अपनी मान्यता और लोककथा है। गोवर्धन पूजा में गोधन यानी गायों की पूजा की जाती है। शास्त्रों में बताया गया है कि गाय उसी प्रकार पवित्र होती है जैसे नदियों में गंगा। गाय को देवी लक्ष्मी का स्वरूप भी कहा गया है। देवी लक्ष्मी जिस प्रकार सुख समृद्धि प्रदान करती हैं उसी प्रकार गौ माता भी अपने दूध से स्वास्थ्य रूपी धन प्रदान करती हैं। इनका बछड़ा खेतों में अनाज उगाता है। इस तरह गौ सम्पूर्ण मानव जाती के लिए पूजनीय और आदरणीय है। गौ के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए ही कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन गोर्वधन की पूजा की जाती है और इसके प्रतीक के रूप में गाय की।[7]

जब कृष्ण ने ब्रजवासियों को मूसलधार वर्षा से बचने के लिए सात दिन तक गोवर्धन पर्वत को अपनी सबसे छोटी उँगली पर उठाकर रखा और गोप-गोपिकाएँ उसकी छाया में सुखपूर्वक रहे। सातवें दिन भगवान ने गोवर्धन को नीचे रखा और हर वर्ष गोवर्धन पूजा करके अन्नकूट उत्सव मनाने की आज्ञा दी। तभी से यह उत्सव अन्नकूट के नाम से मनाया जाने लगा।

**गोर्वधन की पूजा**

इस दिन प्रात: काल शरीर पर तेल की मालिश करने के बाद में स्नान करने का प्राचीन परंपरा है. इस दिन आप सुबह जल्दी उठकर पूजन सामग्री के साथ में आप पूजा स्थल पर बैठ जाइए और अपने कुल देव का, कुल देवी का ध्यान करिए पूजा के लिए गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत पूरी श्रद्धा भाव से तैयार कीजिए. इसे लेटे हुये पुरुष की आकृति में बनाया जाता है. यदि आप से ठीक तरीके से नहीं बने तो आप चाहे जैसा बना लीजिए. प्रतीक रूप से गोवर्धन रूप में आप इसे तैयार कर लीजिए फूल, पत्ती, टहनीयो एवं गाय की आकृतियों से या फिर आप अपनी सुविधा के अनुसार इसे किसी भी आकृति से सजा लीजिए.

गोवर्धन की आकृति तैयार कर उनके मध्य में भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति रखी जाती है नाभि के स्थान पर एक कटोरी जितना गड्ढा बना लिया जाता है और वहां एक कटोरि या मिट्टी का दीपक रखा जाता है फिर इसमें दूध, दही, गंगाजल, शहद और बतासे इत्यादि डालकर पूजा की जाती है और बाद में इसे प्रसाद के रूप में बांटा जाता है.[8]

गोवर्धन पूजा के दौरान एक मंत्र का जाप करना चाहिए.

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

कुछ स्थानों पर गोवर्धन पूजा के साथ ही गायों को स्नान कराने की उन्हें सिंदूर इत्यादि पुष्प मालाओं से सजाए जाने की परंपरा भी है इस दिन गाय का पूजन भी किया जाता है तो यदि आप गाय को स्नान करा कर उसे सजा सकते हैं या उसका श्रृंगार कर सकते हैं तो कोशिश करिए कि गाय का श्रृंगार करें और उसके सिंह पर घी लगाए गुड खिलाएं. गाय की पूजा के बाद में एक मंत्र का उच्चारण किया जाता है जिससे लक्ष्मी जी प्रसन्न होती हैं और आपके घर में कभी धन की कमी नहीं रहती है.

फल मिठाई इत्यादि आप पूजा के दौरान गोवर्धन में अर्पित करिए गन्ना चढ़ाई है और एक कटोरी दही नाभि स्थान में डाल कर झरनी में से छिड्कते हैं. गोवर्धन जो बनाया जाता है गोबर का उसमें दहि डालकर उसको झरनी से छानीये और फिर गोवर्धन के गीत गाते हुए गोवर्धन की सात बार परिक्रमा की जाती है परिक्रमा के समय एक व्यक्ति हाथ में जल का लोटा व दुसारा व्यक्ति अन्न यानि कि जौ लेकर चलते हैं और जल वाला व्यक्ति जल की धारा को धरती पर गिराते हुआ चलता है और दुसरा अन्न यानि कि जौ बोते हुए परिक्रमा पूरी करते हैं.

**यमुना की होली**

पवित्र नदी यमुना के संग होली! वे होली के लोकगीत गाते, नदी में कुछ रंग छिड़कते तत्पश्चात आपस में होली खेलते। यह प्रथा अधिकतर उन सभी अनुष्ठानों में पाली जाती है जिनका आयोजन घाटों में होता है। चारों ओर हर्ष एवं उल्हास का वातावरण था जो यहाँ सदैव रहता है। यूँ ही नहीं कृष्ण ने इस स्थान को खेलने तथा रास लीला रचाने के लिए चुना था।

चुनरी मनोरथ में यमुनाजी को चुनरी अर्पित की जाती है। उन्हें पावन मथुरा की देवी माना जाता है। परिवारजन उन्हें अर्पित करने के लिए अत्यंत लम्बी साड़ी लाते हैं जिसे वे कई साड़ियों को जोड़कर बनाते हैं। अधिकतर १०१ साड़ियों को आपस में सिलकर यह साड़ी तैयार की जाती है। कभी कभी तो भक्तगण ४०० साड़ियों तक को जोड़कर ये लम्बी साड़ी तैयार करते हैं। इस लम्बी साड़ी के एक छोर को इसी तट पर रखकर साड़ी को अनेक नौकाओं द्वारा पावन नदी के उस पार तक ले जाते हैं। जब साड़ी का दूसरा छोर नदी पार कर दूसरे किनारे तक पहुंचता है तो ऐसा प्रतीत होता है मानो नदी ने चुनरी ओढ़ ली है। चुनरी मनोरथ मुख्यतः गुजरात एवं राजस्थान के वैष्णव परिवार के सदस्य करते हैं जो पुष्टिमार्ग के अनुयायी हैं। यमुना देवी पुष्टिमार्ग भक्ति के अनुयायियों की प्रमुख देवी हैं। इनके अतिरिक्त किसी अन्य भक्त के लिए यह अनुष्ठान करने के लिए कोई बंधन नहीं है। वहां के पुजारीगण प्रसिद्ध सांसद हेमा मालिनी द्वारा किये गए चुनरी मनोरथ की कथा सुनाते नहीं थकते। उन्होंने यह अनुष्ठान करवाया था, कदाचित सांसद बनने के पश्चात कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए।[9]

यह अनुष्ठान वर्ष भर किसी भी समय किया जा सकता है। घाट की सीड़ियों पर एक आश्रय निर्मित किया गया है ताकि अनुष्ठान के समय लोग इसके नीचे बैठकर देख सकें। यह अनुष्ठान अत्यंत विस्तृत है तथा इसके संपन्न होने तक कई घंटे लग जाते हैं।

अधिक मास यानी मलमास या पुरुषोत्तम मास में ब्रज के मठ मंदिरों में यूं तो अनेक धार्मिक कार्यक्रम और अनुष्ठान होते हैं, लेकिन ब्रज के प्रमुख स्थलों मथुरा, वृंदावन और गोवर्धन की परिक्रमा का विशेष महत्व है। धार्मिक मान्यता है कि इस समय में जो भी पूजा

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

या धार्मिक कार्य किए जाते हैं उसका कई गुणा पुण्य मिलता है। इस माह में ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा का भी अपना अलग महत्व है। इस परिक्रमा में कृष्ण काल के तमाम लीला स्थल और देवालय शामिल हैं जो पूरे ब्रज में चौरासी कोस में फैले हुए हैं। मान्यता है कि अधिक मास में इनकी परिक्रमा करके श्रद्धालु पुण्य कमाते हैं। ब्रज चौरासी कोस की यह परिक्रमा हरियाणा और राजस्थान के गांवों से भी होकर गुजरती है।

करीब 268 किलोमीटर परिक्रमा मार्ग में करीब 1300 के आसपास गांव पड़ते हैं। कृष्ण की लीलाओं से जुड़ी 1100 सरोवरें, 36 वन-उपवन, पहाड़-पर्वत पड़ते हैं। बालकृष्ण की लीलाओं के साक्षी उन स्थल और देवालयों के दर्शन भी परिक्रमार्थी करते हैं जिनके दर्शन शायद ही पहले कभी किए हों। परिक्रमा के दौरान श्रद्धालुओं को यमुना नदी को भी पार करना होता है।

सभी तीर्थों को ब्रज में बुलाया

मान्यता है कि जब यशोदा मैया और नंद बाबा ने भगवान श्री कृष्ण से 4 धाम की यात्रा की इच्छा जाहिर की तो भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि आप बुजुर्ग हो गए हैं, इसलिए मैं आप के लिए यहीं सभी तीर्थों और चारों धामों को आह्वान कर बुला देता हूं। उसी समय से केदरनाथ और बद्रीनाथ भी यहां मौजूद हो गए। 84 कोस के अंदर राजस्थान की सीमा पर मौजूद पहाड़ पर केदारनाथ का मंदिर है। पर्वत पर नंदी स्वरूप में दिखने वाली विशालकाय शिला के नीचे शिव जी का छोटा सा मंदिर है। इसके अलावा बद्रीनाथ भी 84 कोस में ही विराजमान हैं। जिन्हें बूढ़े बद्री के नाम से जाना जाता है। मंदिर के पास ही अलकनंदा कुंड भी है। इसके अलावा गुप्त काशी, यमुनोत्री और गंगोत्री के भी दर्शन यहां श्रद्धालुओं को होते हैं।[7]

शॉर्टकट पर अधूरी मानी जाती है परिक्रमा

84 कोस परिक्रमा के लिए स्थान, गांव और इसकी जद में आने वाले मंदिर और परिक्रमा मार्ग पहले से ही तय हैं और उसी रास्ते से होकर श्रद्धालु परिक्रमा करते हैं। कीचड़, कंकड़-पत्थर के रास्तों पर ही चलकर श्रद्धालु परिक्रमा पूरी करते हैं। कोई भी श्रद्धालु दूरी कम करने के लिए शॉर्टकट या दूसरे रास्तों से होकर नहीं गुजरता और ऐसा करने पर उसकी परिक्रमा अधूरी मानी जाती है।

प्रमुख सरोवर

कृष्ण की लीलाओं की साक्षी और उनसे जुड़ी प्रमुख सरोवरों में जो प्रमुख सरोवरें है, उनमें सूरज सरोवर, कुसुम सरोवर, विमल सरोवर, चंद्र सरोवर, रूप सरोवर, पान सरोवर, मान सरोवर, प्रेम सरोवर, नारायण सरोवर, नयन सरोवर आदि हैं। परिक्रमाथी इन सरोवरों के दर्शन करने के साथ ही आचमन लेकर और इनमें स्नान कर स्वयं को धन्य मानते हैं।

ब्रज में विद्यमान 16 देवियां

कात्यायनी देवी, शीतला देवी, संकेत देवी, ददिहारी, सरस्वती देवी, वृंदादेवी, वनदेवी, विमला देवी, पोतरा देवी, नरी सैमरी देवी, सांचैली देवी, नौवारी देवी, चौवारी देवी, योगमाया देवी, मनसा देवी, बंदी की आनंदी देवी।

ब्रज क्षेत्र के प्रमुख महादेव मंदिर

भूतेश्वर महादेव, केदारनाथ, आशेश्वर महादेव, चकलेश्वर महादेव, रंगेश्वर महादेव, नंदीश्वर महादेव, पिपलेश्वर महादेव, रामेश्वर महादेव, गोकुलेश्वर महादेव, चिंतेश्वर महादेव, गोपेश्वर महादेव, चक्रेश्वर महादेव।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

**गोपेश्वर महादेव**

ब्रज चौरासी कोस यात्रा

वराह पुराण कहता है कि पृथ्वी पर 66 अरब तीर्थ हैं और वे सभी चातुर्मास में ब्रज में आकर निवास करते हैं। यही वजह है कि ब्रज यात्रा करने वाले इन दिनों यहाँ खिंचे चले आते हैं। हज़ारों श्रद्धालु ब्रज के वनों में डेरा डाले रहते हैं।

∟ ब्रजभूमि की यह पौराणिक यात्रा हज़ारों साल पुरानी है। चालीस दिन में पूरी होने वाली ब्रज चौरासी कोस यात्रा का उल्लेख वेद-पुराण व श्रुति ग्रंथसंहिता में भी है। कृष्ण की बाल क्रीड़ाओं से ही नहीं, सत युग में भक्त ध्रुव ने भी यही आकर नारद जी से गुरु मन्त्र ले अखंड तपस्या की व ब्रज परिक्रमा की थी।

∟ त्रेता युग में प्रभु राम के लघु भ्राता शत्रुघ्न ने मधु पुत्र लवणासुर को मार कर ब्रज परिक्रमा की थी। गली बारी स्थित शत्रुघ्न मंदिर यात्रा मार्ग में अति महत्व का माना जाता है।[8]

∟ द्वापर युग में उद्धव जी ने गोपियों के साथ ब्रज परिक्रमा की।

∟ कलि युग में जैन और बौद्ध धर्मों के स्तूप बैल्य संघाराम आदि स्थलों के सांख्य इस परियात्रा की पुष्टि करते हैं।

∟ 14वीं शताब्दी में जैन धर्माचार्य जिन प्रभु शूरी की में ब्रज यात्रा का उल्लेख आता है।

∟ 15वीं शताब्दी में माध्व सम्प्रदाय के आचार्य मघवेंद्र पुरी महाराज की यात्रा का वर्णन है तो

∟ 16वीं शताब्दी में महाप्रभु वल्लभाचार्य, गोस्वामी विट्ठलनाथ, चैतन्य मत केसरी चैतन्य महाप्रभु, रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी, नारायण भट्ट, निम्बार्क संप्रदाय के चतुरानागा आदि ने ब्रज यात्रा की थी।

चौरासी कोस यात्रा मार्ग मथुरा में ही नहीं, अलीगढ़, भरतपुर, गुड़गांव, फरीदाबाद की सीमा तक में पड़ता है, लेकिन इसका अस्सी फीसदी हिस्सा मथुरा में है।36 नियमों का नित्य पालन ब्रज यात्रा के अपने नियम हैं इसमें शामिल होने वालों के प्रतिदिन 36 नियमों का कड़ाई से पालन करना होता है, इनमें प्रमुख हैं धरती पर सोना, नित्य स्नान, ब्रह्मचर्य पालन, जूते-चप्पल का त्याग, नित्य देव पूजा, कर्थसंकीर्तन, फलाहार, क्रोध, मिथ्या, लोभ, मोह व अन्य दुर्गुणों का त्याग प्रमुख है। इसके अलावा सत्य बोलना, दूसरों के अपराधों का क्षमा करना, तीर्थों में स्नान करना, आचमन करना, भगवत निवेदित प्रसाद का सेवन, तुलसीमालापर हरिनामर कीर्तन या वैष्णवों के साथ हरिनाम संकीर्तन करना चाहिए। परिक्रमा के समय मार्ग में स्थित ब्राह्मण, श्रीमूर्ति, तीर्थ और भगवद्लीला स्थलियों का

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 4, April 2022||
|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

विधिपूर्वक सम्मान एवं पूजा करते हुए परिक्रमा करें। परिक्रमा पथ में वृक्ष, लता, गुल्म, गो आदि को नहीं छेड़ना, साधु-संतों आदि का अनादर नहीं करना, साबुन, तेल और क्षौर कार्य का वर्जन करना, चींटी इत्यादि जीव-हिंसा से बचना, परनिन्दा, पर चर्चा और कलेस से सदा बचना चाहिए।[9]

## परिणाम

एक समय ब्रज की गोपियों को कृष्ण के संग खेलते एवं रास लीला रचाते हुए गर्व उत्पन्न हो गया था। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि कृष्ण सदैव उनका कहा मानते हैं तथा वे जो कहें वह करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। जैसे ही कृष्ण को यह आभास हुआ, उन्होंने गोपियों को सही दिशा दिखने का निश्चय किया। वे पवित्र यमुना के जल के भीतर जाकर छुप गए। उन्हें ना देखकर सभी गोपियों को अत्यंत पीड़ा हुई तथा उनकी दुर्गति होने लगी। बावरी होकर उन्होंने गोपी गीत गाना आरम्भ किया।

वे एक वन से दूसरे वन तक तथा एक तालाब से दूसरे तालाब तक दर दर भटकने लगीं। अंततः वे यमुना के समीप गयीं तथा उनसे कृष्ण के विषय में पूछा। गोपियों की दुर्दशा एवं उनका दुःख देख पावन नदी का हृदय पिघल गया। उन्होंने कृष्ण से बाहर आकर गोपियों के मुख व जीवन में आनंद वापिस लाने का अनुनय किया।

गोपियों ने यमुनाजी को धन्यवाद दिया तथा कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु उन्हें चुनरी अर्पित की। उस समय से यह परंपरा स्थापित हो गयी। भक्तगण इच्छा पूर्ति के उपरांत पावन नदी की ओर कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उन्हें चुनरी उढ़ाते हैं। परिवारजन अपने शीश पर साड़ियों का गट्ठा रख कर धूमधाम से शोभायात्रा निकालते हैं। वे स्वयं भी जितना संभव हो, उत्तम वस्त्र धारण करते हैं। मैंने देखा, चुनरी मनोरथ करते एक परिवार की सभी स्त्रियाँ लाल रंग की बांधनी साड़ी पहने, विशेष रूप से सजी हुई थीं। दूसरे परिवार की स्त्रियों ने भारी रेशमी साड़ियाँ एवं भव्य आभूषण धारण किया हुआ था। मेरे अनुमान से सभी साड़ियाँ नवीन थीं। सभी मधुर तान पर गीत गाते एवं नृत्य करते पवित्र नदी के घाट पर जा रही थीं। वे जब बाजार से होते हुए जा रही थीं, वहां उपस्थित सभी के मुख पर दिव्य प्रसन्नता थी क्योंकि उनकी लाडली यमुनाजी का आज विशेष श्रृंगार होने जा रहा है। एक कथा के अनुसार, कृष्ण के जन्म के पश्चात् सर्वप्रथम यमुनाजी को उनके चरण स्पर्श करने का अवसर प्रदान हुआ था। जब कृष्ण का जन्म हुआ था, उनके पिता वसुदेव उन्हें एक टोकरी में रखकर यमुना पार गोकुल ले गए थे जहां उनके मित्र नन्द एवं यशोदा का निवास था। वे जब यमुना में उतरे, नदी का जल उनके गले तक पहुँच गया था। तब कृष्ण ने टोकरी से चरण बाहर निकाल लिए। जैसे ही यमुना ने उनके चरण स्पर्श किये, उसका जल स्तर नीचे जाने लगा। वसुदेव ने आसानी से यमुना पार कर ली।[7,8]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

निष्कर्ष

कृष्ण जन्माष्टमी, जिसे केवल जन्माष्टमी या गोकुलाष्टमी के रूप में भी जाना जाता है, एक वार्षिक हिंदू त्योहार है जो विष्णुजी के दशावतारों में से आठवें और चौबीस अवतारों में से बाईसवें अवतार श्रीकृष्ण के जन्म का जश्न मनाता है।

यह हिंदू चंद्र कैलेंडर के अनुसार, कृष्ण पक्ष (अंधेरे पखवाड़े) के आठवें दिन (अष्टमी) को भाद्रपद में मनाया जाता है । यह एक महत्वपूर्ण त्योहार है, खासकर हिंदू धर्म की वैष्णव परंपरा में। भागवत पुराण (जैसे रास लीला या कृष्ण लीला) के अनुसार कृष्ण के जीवन के नृत्य-नाटक की परम्परा, कृष्ण के जन्म के समय मध्यरात्रि में भक्ति गायन, उपवास (उपवास), रात्रि जागरण (रात्रि जागरण), और एक त्योहार (महोत्सव) अगले दिन जन्माष्टमी समारोह का एक हिस्सा हैं। यह मणिपुर, असम, बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश तथा भारत के अन्य सभी राज्यों में पाए जाने वाले प्रमुख वैष्णव और गैर-सांप्रदायिक समुदायों के साथ विशेष रूप से मथुरा और वृंदावन में मनाया जाता है। कृष्ण जन्माष्टमी के बाद त्योहार नंदोत्सव होता है, जो उस अवसर को मनाता है जब नंद बाबा ने जन्म के सम्मान में समुदाय को उपहार वितरित किए।कृष्ण देवकी और वासुदेव अनकदुंदुभी के पुत्र हैं और उनके जन्मदिन को हिंदुओं द्वारा जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है, विशेष रूप से गौड़ीय वैष्णववाद परंपरा के रूप में उन्हें भगवान का सर्वोच्च व्यक्तित्व माना जाता है। जन्माष्टमी हिंदू परंपरा के अनुसार तब मनाई जाती है जब माना जाता है कि कृष्ण का जन्म मथुरा में भाद्रपद महीने के आठवें दिन (ग्रेगोरियन कैलेंडर में अगस्त और 3 सितंबर के साथ ओवरलैप) की आधी रात को हुआ था।कृष्ण का जन्म अराजकता के क्षेत्र में हुआ था। यह एक ऐसा समय था जब उत्पीड़न बड़े पैमाने पर था, स्वतंत्रता से वंचित किया गया था, बुराई हर जगह थी, और जब उनके मामा राजा कंस द्वारा उनके जीवन के लिए खतरा था। कुछ समुदाय कृष्ण की किंवदंतियों को मक्कन चोर (मक्खन चोर) के रूप में मनाते हैं।

हिंदू जन्माष्टमी को उपवास, गायन, एक साथ प्रार्थना करने, विशेष भोजन तैयार करने और साझा करने, रात्रि जागरण और कृष्ण या विष्णु मंदिरों में जाकर मनाते हैं। प्रमुख कृष्ण मंदिर 'भागवत पुराण' और 'भगवद गीता' के पाठ का आयोजन करते हैं। कई समुदाय नृत्य-नाटक कार्यक्रम आयोजित करते हैं जिन्हें रास लीला या कृष्ण लीला कहा जाता है। रास लीला की परंपरा विशेष रूप से मथुरा क्षेत्र में, भारत के पूर्वोत्तर राज्यों जैसे मणिपुर और असम में और राजस्थान और गुजरात के कुछ हिस्सों में लोकप्रिय है। यह शौकिया कलाकारों की कई टीमों द्वारा अभिनय किया जाता है, उनके स्थानीय समुदायों द्वारा उत्साहित किया जाता है, और ये नाटक-नृत्य नाटक प्रत्येक जन्माष्टमी से कुछ दिन पहले शुरू होते हैं।

श्री कृष्ण जन्म की कहानी का भी गूढ़ अर्थ है। इस कहानी में देवकी शरीर की प्रतीक हैं और वासुदेव जीवन शक्ति अर्थात प्राण के। जब शरीर प्राण धारण करता है, तो आनंद अर्थात श्री कृष्ण का जन्म होता है। लेकिन अहंकार (कंस) आनंद को खत्म करने का प्रयास करता है। यहाँ देवकी का भाई कंस यह दर्शाता है कि शरीर के साथ-साथ अहंकार का भी अस्तित्व होता है। एक प्रसन्न एवं आनंदचित्त व्यक्ति कभी किसी के लिए समस्याएँ नहीं खड़ी करता है, परन्तु भावनात्मक रूप से दुखी व्यक्ति अक्सर दूसरों को दुखी करते हैं, या उनकी राह में अवरोध पैदा करते हैं। जिस व्यक्ति को लगता है कि उसके साथ अन्याय हुआ है, वह अपने अहंकार के कारण दूसरों के साथ भी अन्यायपूर्ण व्यवहार करता है। अहंकार का सबसे बड़ा शत्रु आनंद है। जहाँ आनंद और प्रेम है वहाँ अहंकार टिक नहीं सकता, उसे झुकना ही पड़ता है। समाज में एक बहुत ही उच्च स्थान पर विराजमान व्यक्ति को भी अपने छोटे बच्चे के सामने झुकना पड़ जाता है। जब बच्चा बीमार हो, तो कितना भी मजबूत व्यक्ति हो, वह थोडा असहाय महसूस करने ही लगता है। प्रेम, सादगी और आनंद के साथ सामना होने पर अहंकार स्वतः ही आसानी से ओझल होने लगता है । श्री कृष्ण आनंद के प्रतीक हैं, सादगी के सार हैं और प्रेम के स्रोत हैं। कंस के द्वारा देवकी और वासुदेव को कारावास में डालना इस बात का सूचक है

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104027|

कि जब अहंकार बढ जाता है तब शरीर एक जेल की तरह हो जाता है। जब श्री कृष्ण का जन्म हुआ था, जेल के पहरेदार सो गये थे। यहाँ पहरेदार वह इन्द्रियाँ है जो अहंकार की रक्षा कर रही हैं क्योंकि जब वह जागता है तो बहिर्मुखी हो जाता है। जब यह इन्द्रियाँ अंतर्मुखी होती हैं तब हमारे भीतर आंतरिक आनंद का उदय होता है।[8,9]

## संदर्भ

1) हिन्दू कालक्रम (Hindu Timeline) (अंग्रेजी में) 2001
2) हिन्दू धर्म के अद्वितीय सिद्धान्त 1995
3) History of Hinduism on MSN Encarta encyclopedia (Archived 2009)
4) Hinduism in Modern Times 2007
5) Timeline of Hinduism and its offshoots 2009
6) Some Missing Chapters of World History - Chapter 21 - ENTIRE PACIFIC REGION AS HINDU TERRITORY 2000
7) Ancient Hinduism in Europe 1999
8) ARABIA'S ANCIENT VEDIC PAST 1994
9) In Search of an Ancient Hindu Temple in Azerbaijan 1993

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details